

यसामारस्

EXTRAORDINARY

भाग **II—सन्द** 3—-वपसन्द (1)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

र्सं० 296] नई विस्ती, हानिवार, विसम्बर 15, 1973/ब्राह्मयण 24, 1895 No. 296] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 15, 1973/AGRAHAYANA 24, 1895

इस भाग में भिग्न पृष्ठ सं्या दी जाती है जिससे कि यह धराग सबका के रूप में रका जा सके । Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st November, 1973.

THE COMPANY'S LIQUIDATION ACCOUNT (AMENDMENT) RULES, 1973.

- . G. S. R. 523 (E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 555, feed with sub-section (i) of section 642 of the Companies Act, 1956, (1 of 1956) the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Company's Liquidation Account Rules, 1965, namely:—
 - 2. These rules may be called the Company's Liquidation Account (Amerement) Rules, 1973.
- a. In the Company's Liquidation Account Rules, 1965, for Annexure II, the following Annexure shall be substituted, namely:—

"ANNEXURE---II"

[See Rule 9(5)]

]son of

shall ur less excluded by or re-
shall ur less excluded by or re-
Please

who is personally known to me and signed in my presence.

His occupation & Address.

The surety is personally known to me and signed in my presence.

ACCEPTED.

Signature of Witness His occupation & Address

Regional Director: Company Law BoardRegion.

Sec.	3(4)-]	THE GAZETTE OF INDIA EXTRAORDINARY	1 <i>7</i> 6
Notes	:		
((I) Here qu	quote the name of the claimant who is the Principal Party.	
	(II) Here	quote the name of the Surety, if any.	
,	(III) Here	e quote the name of the company in respect whereof the payment is bein	g made
		portion in brackets may be retained where applicable i.e. in cases—where the not stand to the credit of the principal party.	he amour
	(V) Here s	state the reasons why the claimant could not receive money now claim	ed earlies
	be pro	he case of an executant who is not well conversant with English, the decroperly read over and explained by a competent person who should effect.	d shoul d attest t
Pl	esse strike (off whatever words are not necessary or appropriate.	
		CERTIFICATE OF SOLVENCY	
		certify that Shri	known t
Date	•	Signature of the Gazetted Officer Officer or a member of Municipality	
		Designation with the stamp of office.	
		[No. 2/19/7	/1-CL.V]
		P. B. MENON,	t. Secy.
		ृषिषि, स्याय झीर कस्पती कार्य मत्राह्य	
		(कम्पनीकार्यविभाग)	1
		ग्रथि सूच मा	
		मई विल्ली 21, मदम्बर, 1973	
		कम्पनी का परि-समः।पन साता (संशोधन) नियम, 1973	
सरक	उपधारा (।	ा॰ कि॰ 523 (ग्न).—कम्पनी ग्रधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धा 1) के साथ पठित, उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए ो का परि-समापन खाक्षा नियम, 1965 में ग्रौर संशोधन करने के लिए निम्नर्लिय त् :	र्, केन्द्रीय
	(1)	l) इन नियमों का नाम कम्पनी का परि-समापन खाता (संग्रोधन) नियम, 19	973 है।
	(2)	2) कम्पती का परि-समापन खाता नियम, 1965 में, उपाबंध 2 के स्थान प सिखित उपाबन्ध रखा जाएगा, दर्शात् :	र, मिग्न-

"उपावन्ष 2"

[नियम 9(5) देखें]

ga...... (कृपया टिप्पण (1) देखें....)

प्रथम पक्षकार के रूप में....... का निवासी धीर.....का

	_
जिसे इसमें इसके पश्चात् मुख्य पक्षकार कहा गया है (जिस पद के झःसर्गत, जब रख कि संदर्भ से झ वर्जित या में विकक्ष न हो, उसके घारिस, निष्पादक, प्रकासक, दिधिक, प्रतिनिधि और समनुर्धि झाते हैं) ;	
देवतीय पक्षकार के रूप मेंका निवासी भीरका	
का पुत्र	
(कृपया टिप्पण (॥) देखें	<u>)</u>
जिसे इसमें इसके पश्चात् प्रतिभृ वहा गया है (जिस पव के झन्तर्गंस, जब तक कि संदर्भ से झपवजित । में विदञ्ज न हो, उसके वारिस, निष्पादक, प्रशासक, विधिव, प्रिरिनिधि झौर समन्देशिती झाते है	
म विदेश न हो, उसके पारिस, निर्णादक, प्रशासक, विदेशक, प्राराणिक कोर्य समिति है। ग्रीर नृतीय पक्षकार के रूप में प्रादेशिक निर्देशक, कम्पनी–विधि–बोर्ड दूर्वी/१क्षिण/पिस्मी /रस	
क्षेत्र, जिसका कार्यालयं —————में स्थित है (जिस पद के ग्रन्टर्गत, जब हक कि संदर्भ	
भपविजित या में विरुद्ध न हो, उसके पदोत्तरव्रत्ती भाते हैं) के बीच भाज————————————————————————————————————	
	T-
विलेख ;	
यतः (क्रुपया टिप्पन (।।।) देखे) शिमिटेड का समापन हो गव	Π
भीर यतः उक्त कम्पनी के शासकीय समापक के हाथ में या उसके नियंक्षाधीन धन-राशिय	ìi
हा ऐसा भ्रति <mark>सेष जो लेनदारों को देय ऐसे भ्रदावाक</mark> ्रत लाभांशो भौर/या भ्रमिदार्ग को प्रसिदेय ऐसी भ्रवि	Γ-
तरित ग्रास्तियों के मर्ख हैं, जो उनके देय हो जाने के पश्चात् छह मास से ग्रधिक की ग्रवधि तक ग्रदावाष्ट्र	
वीर/या भवितरित ए ^{हे} हैं/या र ही हों, भारत सरकार के मोक खाते में के कम्पर्ना के परि-कमापन खाते ^ह	Ÿ
तंदस भीर जमा कर दिया है ;	
यत : कम्पनी के परि-समापन खाते में जमा की गई रकम के झन्तर्गत लेनदार/धिमदायी के सियत में श्री(उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसके नाम में रकम जम ह) को लाभांग/स्रवितरित धास्तियों के रूप में देय	
·	
भ्रौर यतः मस्य पक्षकार ने	
भीर यत : मुख्य पक्षकार(कृपया टिप्पण (भी) देखें)	
कारण उक्त राग्नि के संबंध में समापक को भपना दावा फाइल महीं कर सका ;	
भौर यत : मुख्य पक्षकार या उसकी भौर से किसी भ्रन्य थ्यक्ति ने	I

भौर यत : मुख्य पक्षकार ने उक्त कम्पनी से सम्बद्ध उक्त कम्पनी के परिन्समापन खाते में से अपने द्वारा दावाकृत उक्त धन-राणि के दिए जाने के लिए पूर्वीषत प्रारेशिक निदेशक से निदेशन किया हैं;

भीर यत : केन्द्रीय सरकार से प्रत्यायोजन के आधार पर (क्य्पनी शक्षितिस्म) 1980 की आरा 637(1) (ख) के साथ पठित अधिसूचना सं० सा०ना वि०-71, हार्य खा व ववसी, 1966 देखे) उक्त प्रादेशिक निदेशक, मुख्य पक्षकार द्वारा इस प्रकार दावाहर राहि के दिए जाने के लिए के ई आदेश देने के लिए उक्त प्रधिनियम की धारा 555 (7) (ख) के दर्धान सक्षम ई कीर कह ऐसा आदेश विर जाने के प्रयोजन के लिए यह ध्रपेक्षा करता है कि क्षतिपूर्ति विलेख का निष्पादन मुख्य पक्षकार द्वारा निम्न प्रकार किया जाए :

भ्रव यह विलेख इस बात का साक्ष्य है कि मुख्य पक्षकार द्वारा पूर्वोक्त रूप से किए गए व्यपदेशन के और उक्त प्रपेक्षा के अनुसरण में तथा उक्त प्रादेशिक निदेशक द्वारा मुख्य पक्षकार की——रु० की राशि के विएजाने के प्रतिफलस्वरूप मुख्य पक्षकार और प्रतिभू, मांग करने पर और बिना किसी पूर्वापत्ति के उक्त प्रादेशिक निदेशक की——रूप की उक्त राशि श्रीर साथ ही मुख्य पक्षकार को भ्रसंदेय मानी गई उक्त राशि (और इस निमित्त सरकार का विनिश्चय श्रीर साथ ही गा और पक्षकारों पर श्रावद्धकर होगा) की दशा में, छह प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से व्याज, देने के लिए एनद्द्वारा स्वयं को संयुक्तन : भ्रीर प्यक्त : वचनबद्ध श्रीर श्रावद्ध करते हैं तथा मुख्य पक्षकार श्रीर प्रतिभू एतद्द्वारा यह श्रीर वचन देते हैं कि वे मुख्य पक्षकार को पूर्वोक्त रूप से किए गए सदाय से सम्बद्ध सभी दायित्वों से और सभी श्रनुयोजनों, दावों श्रीर मांगों, खर्चों, नुकतानों श्रीर व्ययों से जो उक्त प्रादेशिक निदेशक द्वारा उक्त राशि का पूर्वोक्त रूप से संदाय कर दिए जाने के कारण उक्त प्रादेशिक निदेशक के विरुद्ध किसी व्यक्ति द्वारा उद्गृहन, किए जाएं, लाएं जाएं या किए जाएं, सभी रुपयों पर उक्त प्रादेशिक निदेशक की कितिपूर्ति करेंगे श्रीर उसको क्षतिपूरिन श्रीर होन्स सुकत रखेंगे।

इसके साक्ष्यस्वरूप इसके पक्षकारों ने सर्वप्रथम लिखित दिन ग्रीर वर्ष को अपने अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

मख्य पक्षकार के हस्ताक्षर।

मुख्य पक्षकार द्वारा हस्ताक्षरित, मुद्राकित भार परिदत्त जिसको में वैयक्तिक रूप से जानता हूं थ्रौर उसने मेरी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए हैं।	
साक्षी के हस्ताक्षर	–प्रतिभु के हस्ताक्षर
उसकी उपजीविका भ्रौर पता । प्रतिभू को मैं वैयक्तिक रूप	•
से जानता हूं और उसने मेरी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए	
हैं। €	स्वीकृत
मान्नी के हस्ताक्षर	
· ·	त्रादेशिक निदेशक
उसकी उपजीविका श्रीर पता	
	————————————————————————————————————

- (1) यहां उस दावेदार का नाम लिखें जो मुख्य पक्षकार है।
- (2) यहां प्रतिभू, यदि कोई हो, का नाम लिखें।

हिप्पण:-

- (3) यहां उस कम्पनी का नाम लिखे जिसके बारे में सदय किया जा रहा है।
- (4) जहां तागू हो तहां कोष्ठकां में के भाग बनाए रखें जाएं अर्थात् ऐसी दणाओं में जहां रकम मुख्य पक्षकार के नाम में जमा न हो ।
- (5) यहां वे कारण लिखे जिनकी वजह से दावेदार इस ममय दायाष्ट्रत धन को प्राप्त नहीं कर मका ।

(6) ऐसे निष्पादों की दशा में जो अग्रेजी भली प्रकार नहीं जानका है। विलेख उसे किसी सज़म व्यक्ति द्वारा ठीक सरह पढ़ कर सुनाया जाना चाहिए और समझाया जाना चाहिए, जिसको क्षदर्भ की अनुप्रनाणित भी करना चाहिए। कृपया वे शब्द काट दें जो आवस्यक या समुचित नहीं हैं।

श्रीयन क्षमता, प्रमाण पत्र

के निवासी श्रीर श्री————— श्री————————————————————————————————————	
जानता हू श्रीर वह————————————————————————————————————	————रु० की राशि ासे गोधक्षम है।
	राजपस्त्रित भधिकारी, राजस्य भधिकारी या नगरपालिका के सदस्य के हस्ताक्षर ।
	पदाभिघान ग्रौर कार्यानय की मुद्रा ।
	[सं० फा० 2/19/71—सी० ए ल० 5]
	पी० घी० मेनन, संयुक्त संचित्र ।